ख़राब सौदा
पोलैंड की लोककथा

ख़राब सौदा

पोलैंड की लोककथा

लोमड़ी का एक सेब का बाग़ था.

सेही का एक खेत था.

लोमड़ी ने सेही से कहा, "अगर हम दोनों मिलकर तुम्हारे खेत में काम करें फिर हम फसल को आधा-आधा बाँट सकते हैं. बदले में, मैं तुम्हें अपने बगीचे के आधे सेब दे दूंगा."

"ठीक है," सेही ने कहा, "पर हम पहले एक बात पर राज़ी हों.
तुम कौन सा आधा हिस्सा लोगे - जो ज़मीन के ऊपर हवा में उगता है,
या फिर जो ज़मीन के नीचे मिट्टी में उगता है?”
"मैं ज़मीन के ऊपर वाला हिस्सा लूँगा," लोमड़ी ने कहा.
"फिर हम लोग आलू बोयेंगे," सेही ने निर्णय लिया.

दोनों ने मिलकर खेत की जुताई की.

फिर उन्होंने आलू बोए.
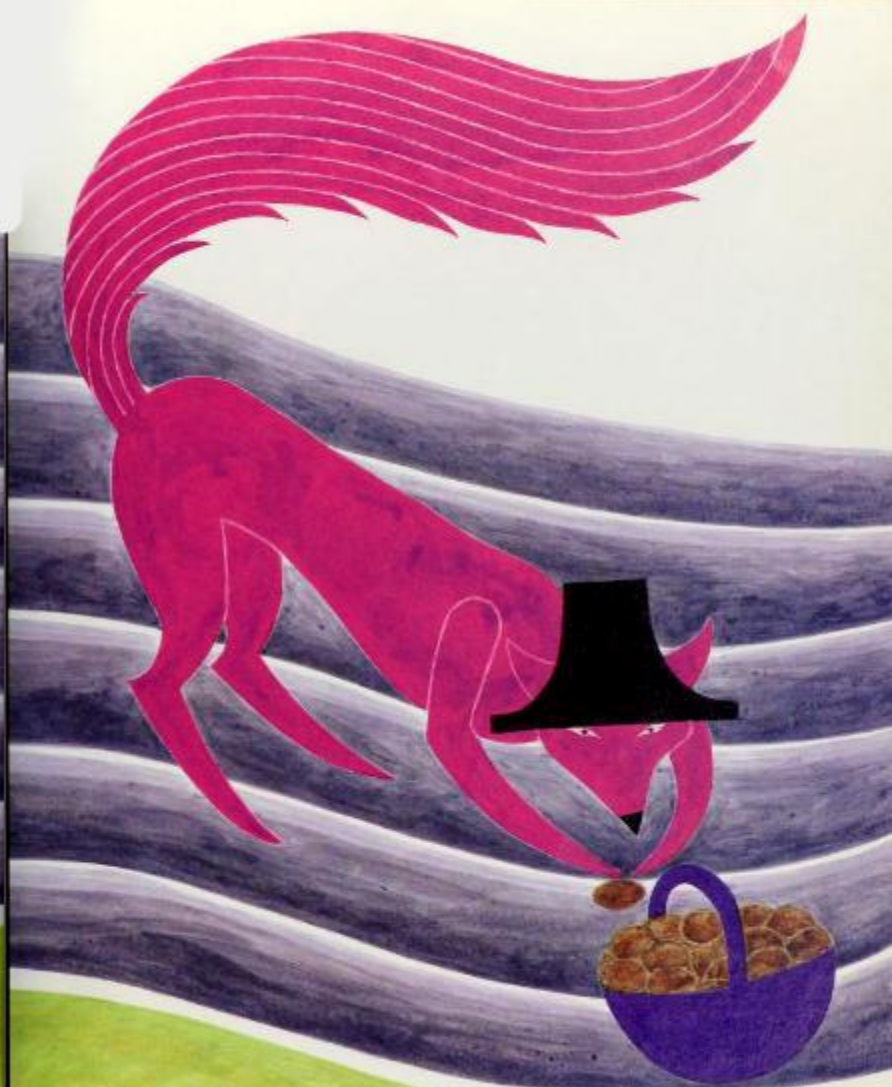
आलू की फसल काटने का समय आया. तब सेही ने लोमड़ी से कहा,
"फसल का ज़मीन के ऊपर वाला हिस्सा तुम्हारा है.
तुम हँसिये से फसल का ऊपर वाला हिस्सा काट लो."
सेही से लोमड़ी ने जो कहा, उसने वही किया.
जल्द ही उसने आलू के ऊपर वाली सब बेकार पत्तियां काट डालीं.

उसके बाद सेही की बारी आई.
उसने ज़मीन खोदकर सारे बढ़िया आलू निकाल लिए.
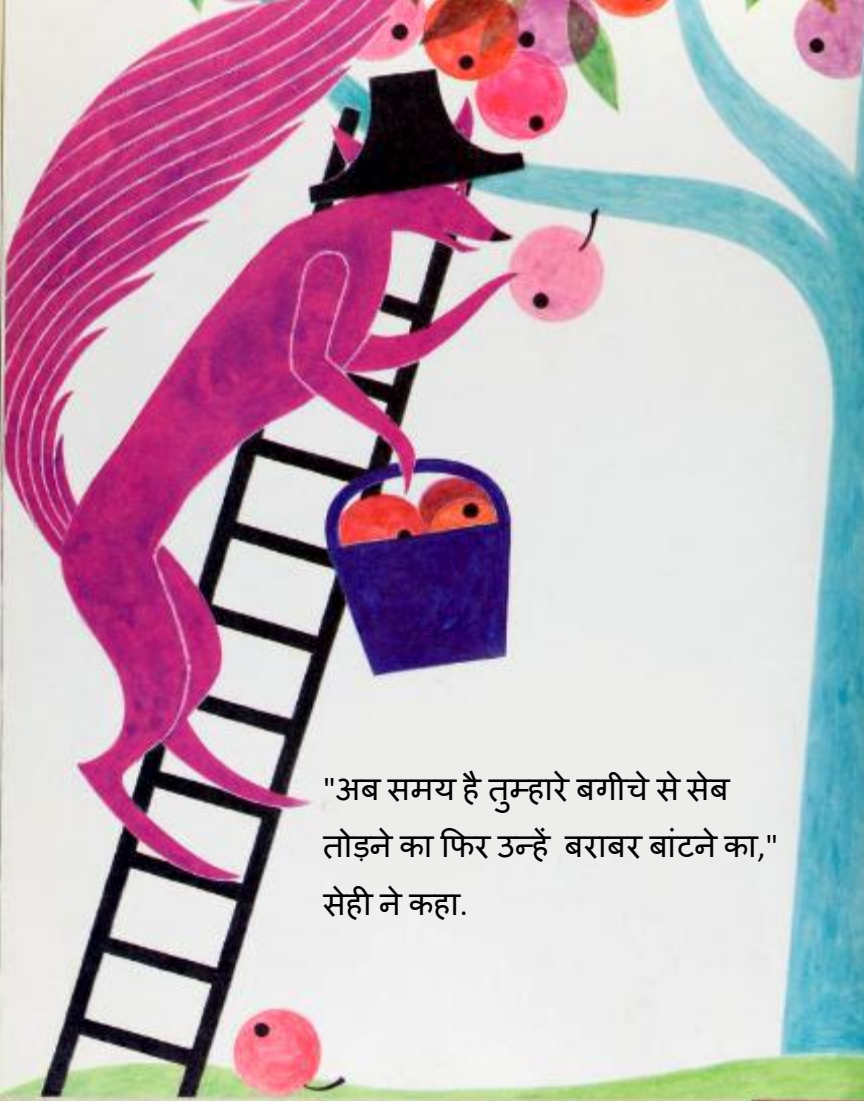
"अब समय है तुम्हारे बगीचे से सेब
तोड़ने का फिर उन्हें बराबर बांटने का,"
सेही ने कहा.
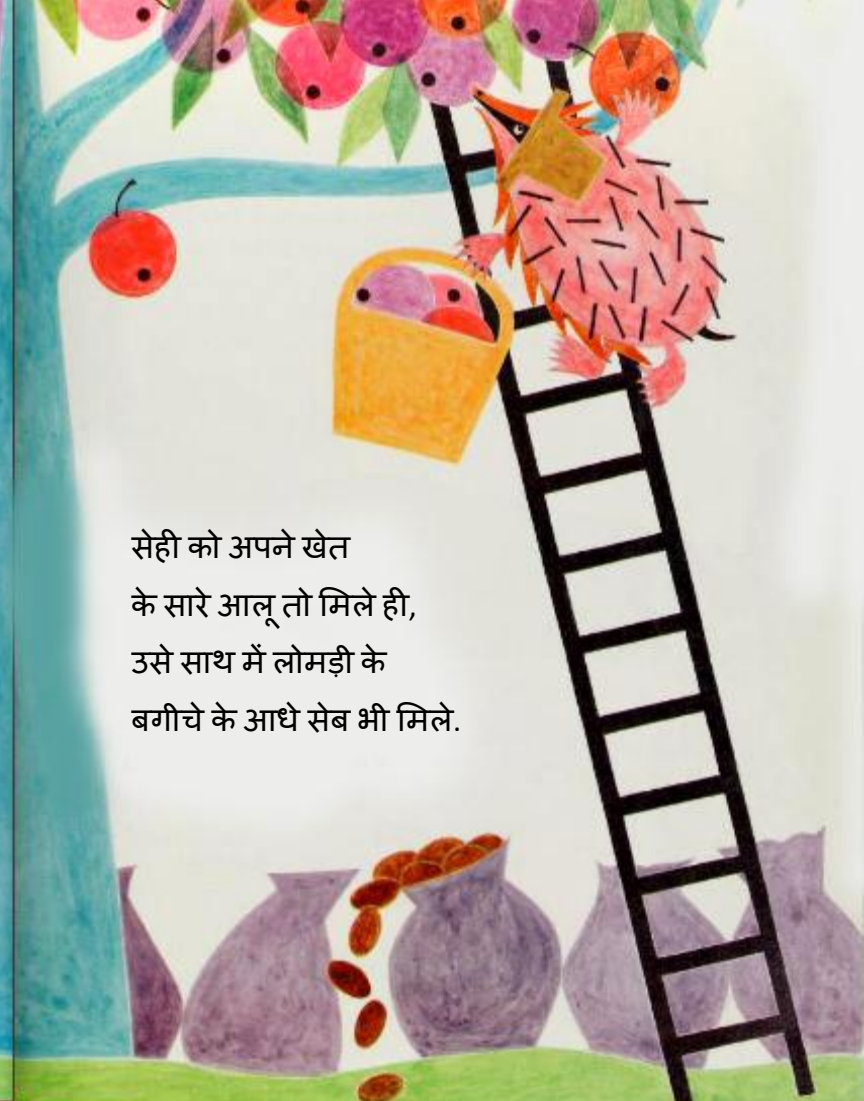
सेही को अपने खेत
के सारे आलू तो मिले ही,
उसे साथ में लोमड़ी के
बगीचे के आधे सेब भी मिले.

"बहुत ख़ुशी से," सेही ने कहा.
"इस बार तुम फसल का कौन सा हिस्सा लोगे,
ज़मीन के ऊपर वाला, या नीचे वाला?"
"क्या, इस बार भी तुम मुझे धोखा देना चाहते हो!
इस बार मैं पागलों जैसे फसल का ऊपर वाला हिस्सा नहीं लूँगा.
इस बार मैं ज़मीन के नीचे वाला हिस्सा लूँगा," लोमड़ी ने कहा.
"ठीक है," सेही ने कहा. "इस बार हम गेहूं बोयेंगे."

अगले साल सेही और लोमड़ी दुबारा मिले.
"क्या हम इस साल भी अपनी फसल को आधा-
आधा बांटे?" लोमड़ी ने पूछा.

फिर उन्होंने खेत की जुताई की.

उसके बाद उन्होंने गेहूं बोया.

गेहूं के ऊंची, सुनहरी बालियां लहलहाने लगीं.
फसल पकने के बाद सेही ने ज़मीन के ऊपर की
सारी फसल काट ली.

फिर लोमड़ी ने जड़ों को खोदा.
पर उसमें उसे कुछ भी काम की चीज़ नहीं मिली.

"चलो अब तुम्हारे बाग़ के सेब तोड़कर
आपस में आधे-आधे बांटते हैं," सेही ने कहा.
इस बार सेही के पास अपने खेत के पूरे गेहूं के
साथ-साथ लोमड़ी के बगीचे के आधे सेब भी थे.

लोमड़ी को जल्दी पता चला
कि वो दुबारा ठगा गया था.
वो मदद के लिए
एक जज के पास गया.

जज ने सेही को बुलाया और उससे कहा, "कल तुम दोनों को गेहूं के खेत में रेस लगानी होगी. तुम में से जो भी जीतेगा उसे ही सब गेहूं और सेब मिलेंगे."

लोमड़ी और सेही दोनों इसके
लिए राज़ी हो गए.

अगले दिन वे खेत पर मिले.

"क्या तुम दोनों तैयार हो?" जज ने पूछा.

फिर जज ने रेस शुरू करने का इशारा किया.

लोमड़ी, सेही की अपेक्षा बहुत तेज़ी से दौड़ा.

पर लोमड़ी ने जितनी भी कोशिश की सेही हमेशा

उसके आगे ही रही. उसका कारण साफ़ था.

सेही के कई रिश्तेदार थे,

जो देखने में बिल्कुल उसके जैसे लगते थे.

वे गेहूं के खेत में जगह-जगह छिपे थे.

जैसे ही वो लोमड़ी को आते हुए देखते वे दौड़ने लगते.

बिल्कुल, आखिरी टप्पे में ही सेही खुद दौड़ा.
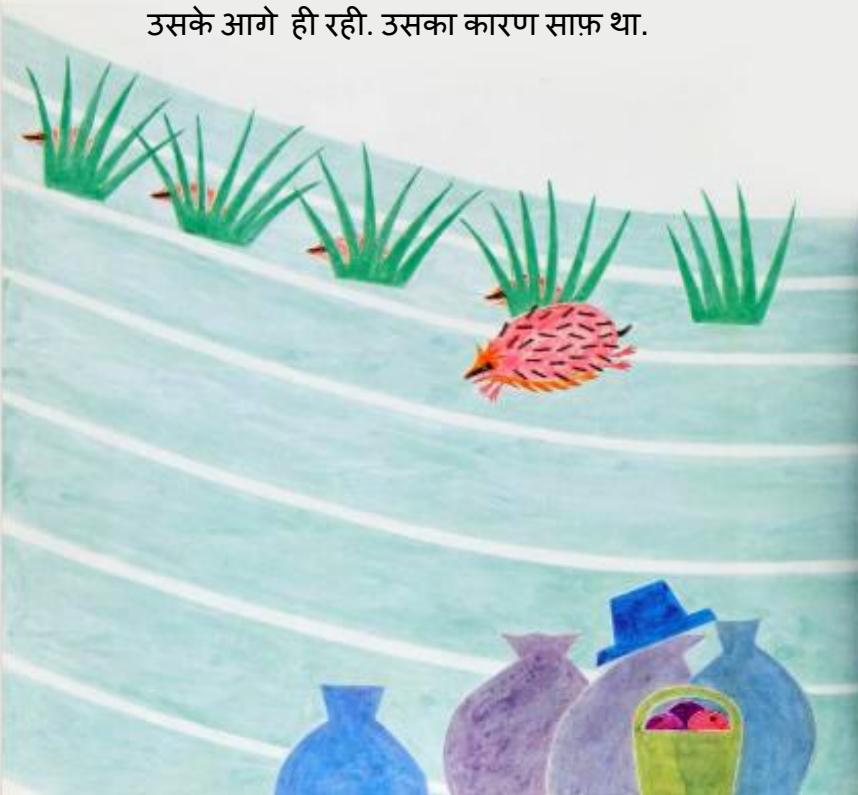
लोमड़ी अभी आधा खेत भी नहीं दौड़ पाया था कि उसने
जज को चिल्लाते हुए सुना, "देखो यह रहा विजेता!"
और वहां सेही ख़ुशी-ख़ुशी खड़ा था, गहरी सांसे लेता हुआ.
इस बार भी सेही ने लोमड़ी को अच्छा धोखा दिया था.
अब लोमड़ी सारा गेहूं और सारे सेब भी खो चुका था.
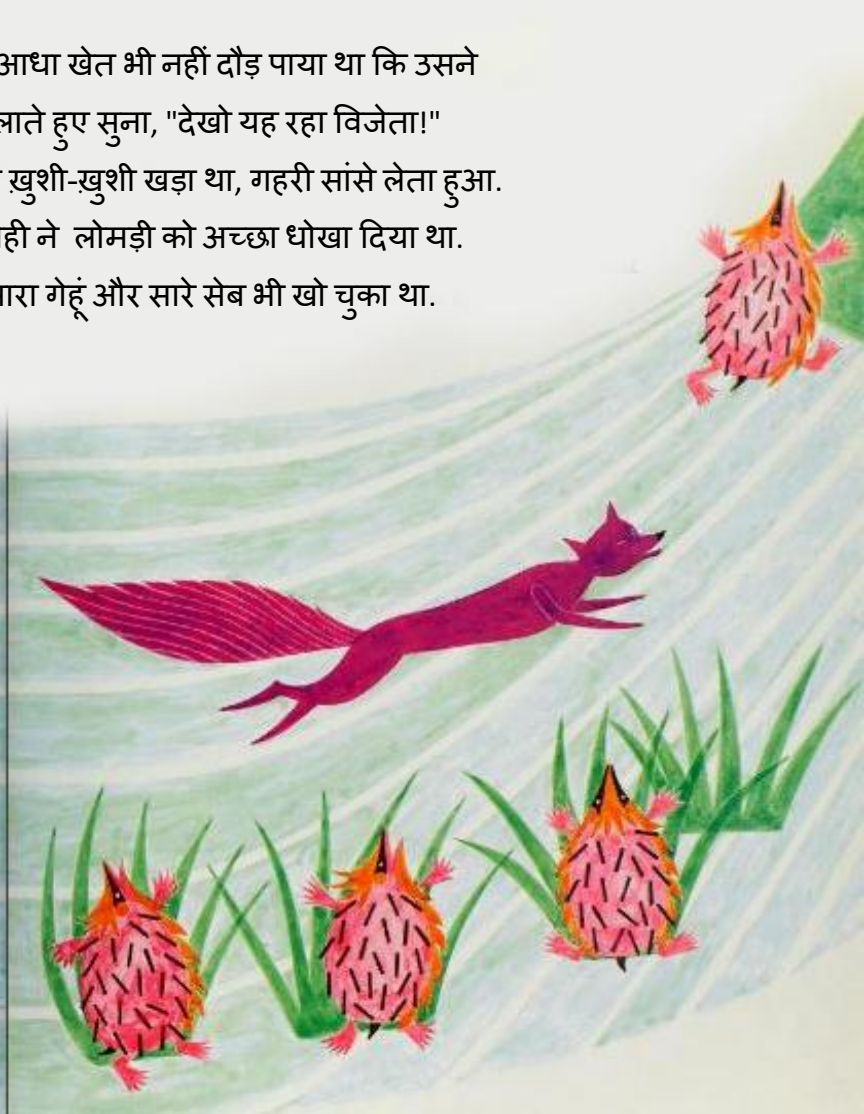
अगले साल वसंत में

सेही ने लोमड़ी से फसल बाँटने की बात कही.

पर इस बार लोमड़ी ने साफ़ मना कर दिया.

समाप्त